नी मादरी
ी *माती,*
ी अनुवाद
आ
सेंटर में
नवर सिंह
ले के
जुड़ाव रहा
ो
क के
वेश की

स्थिति
है.'' सिंह
जिसमें
कह देता
ी है.''

यरा कमल
कवियों-शायरों
दिवंगत मां के
दिया.
क काम से मैंने
से दूर नहीं
नी ही थी. कवि
ना गम रोता
अभिनेता पुत्र
लेखक पुत्र
—पीयूष पाचक

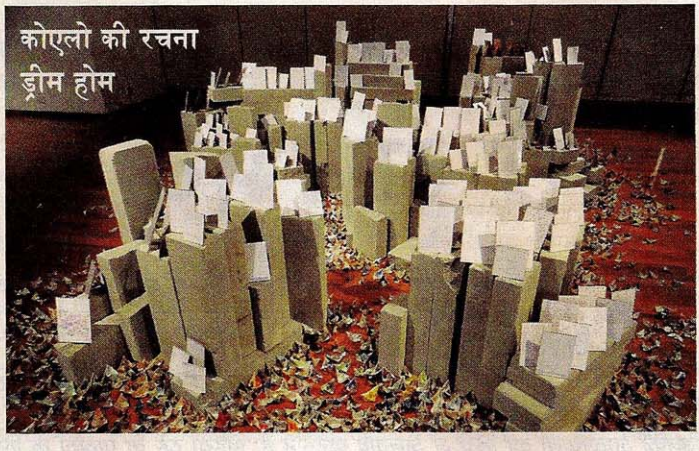

कलाकार/ बप्तिस्ता कोएलो

आम आदमी का पैरोकार

बप्तिस्ता कोएलो के नाम से शायद परिचित न हों आप. मुंबई से निकले एक ऐसे युवा कलाकार, जिनकी इंस्टालेशन कृतियों ने दुनिया भर में हलचल मचाई है. 2004 में कॉलेज से निकलकर उन्होंने एक विज्ञापन एजेंसी में बतौर ग्राफिक डिजाइनर काम शुरू किया. दिन भर विज्ञापन और दूसरी डिजाइनें बनाने के बावजूद उनकी कला की भूख बिलकुल शांत न हुई. यारों-दोस्तों और रिश्तेदारों के समझाने के बावजूद उन्होंने नौकरी छोड दी और ब्रिटेन के बर्मिंघम स्थित आर्ट ऐंड डिजाइन इंस्टीट्यूट में दाखिला ले लिया. निखरकर आ गई उनकी प्रतिभा.

कला के प्रति बप्तिस्ता का नजरिया अनूठा तो नहीं पर भारत के संदर्भ मे नया जरूर था. इंस्टालेशन आर्ट यानी संस्थापन कला की परंपरा भारत में इतनी सशक्त कभी नहीं थी. ऐसे में बप्तिस्ता की दो कृतियां खास तौर पर चर्चा में आईं जब उन्होंने बच्चों के कागज़ के हवाई जहाजों से और दूसरे सियाचिन के ऊपर रचनाएं कीं. अपनी कला के बारे में उनका वक्तव्य है, ''हम कई बार अपनी अंदरूनी संवेदनाओं और अनुभूतियों को अव्यक्त ही रह जाने देते हैं, जो हमारे जीवन के लिए न केवल अत्यंत महत्वपूर्ण होती हैं बल्कि उसे परिभाषित भी करती हैं. मैं उसी अनुभूति को उजागर करके समाज के व्यक्त जीवन में ला कर प्रस्तुत करने की कोशिश करता हूं.''

उनकी चिंतन प्रधान कलात्मकता ने असर डाला. विख्यात पत्रिका *आर्ट इंडिया* का 2007 का प्रतिभाशाली कलाकार का अवार्ड भी उन्हें मिला. 2008 मे इंडिया हैबिटाट सेंटर ने उन्हें अपनी कला की त्रैमासिक पत्रिका का मेहमान सम्पादक बना लिया. सियाचिन पर उनकी इंस्टालेशन सर्वाधिक पसंद की गई. यह एक सजीव चित्र था, जिसमे वहां का अकेलापन एक व्यक्ति का न होकर पूरी मनुष्य जाति का बन जाता है. *मैपिंग थॉट्स* शीर्षक उनकी प्रदर्शनी ऑस्ट्रिया, फ्रांस, कोरिया और आइलैंड की दीर्घाओं में भी सजी. उनके बनाए वीडियो न्यूयॉर्क, बर्लिन, पेरिस वगैरह में भी प्रदर्शित हो चुके हैं. पर बप्तिस्ता की शिकायत है, ''भारत में जनता के लिए कला से संवाद की जगह सीमित जगह है. सार्वजनिक कला को सबके बीच में प्रदर्शित करने की सुविधा होनी चाहिए. आम आदमी कला से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता. कला का मकसद है कि वह अपने से बाहर आकर सोचने का अवसर दे, नई संवेदना पैदा करे.'' —अनुराग यादव